एस.सी.ई.आर.टी., बिहार
द्वारा विकसित

SEP-1

दो वर्षीय सेवापूर्व डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम-1
(4 सप्ताह)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),
महेन्द्रू, पटना, बिहार

पाठ्य पुस्तक विकास समूह

पत्र–SEP-1

(विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1)

दिशाबोध	श्री दीपक कुमार सिंह, भा.प्र.से., अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना श्री सज्जन राजसेकर, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, पटना डॉ0 एस.पी.सिन्हा, सलाहकार, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
लेखक समूह	श्री पप्पु कुमार, व्याख्याता, पी.टी.ई.सी. बंगरा सारण
	श्री ललन कुमार, व्याख्याता, डायट, टीकापट्टी, कटिहार
	डॉ. दिलीप कुमार, व्याख्याता, डायट, भागलपुर
	डॉ. नरेन्द्र देव, प्रधानाध्यापक, मध्य विद्यालय सनौत, मानपुर, गया
	श्री सुग्रीव कुमार, सहायक शिक्षक, उच्च विद्यालय, जोधन बिगहा, पटना
समन्वयक	डॉ0 स्नेहाशीष दास, विभाग प्रभारी, विद्यालयी शिक्षा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
समीक्षक	श्रीमती पिंकी रानी, व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
	श्रीमती ज्योति किरण, डायट, पिरौटा, भोजपुर
	श्रीमती हेमा कुमारी, पी.टी.ई.सी. शेरघाटी, गया

इकाई–1

परिचय/भुमिका

‘विद्यालय अनुभव कार्यक्रम प्रत्येक प्रशिक्षु के लिए नवीन अनुभव को सिखाने एवं सीखने की गहराई से है।’ विद्यालय अनुभव कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षु–शिक्षकों का दक्षता, कौशल, सकारात्मक दृष्टिकोण, व्यक्तित्व इत्यादि का उच्चतम विकास करना है। कोठारी आयोग (1964–66) म. भी शिक्षण म. गुणवत्ता के लिए पेशेवर शिक्षक तैयार करने की बात कही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने भी शिक्षा म. आधुनिकीकरण एवं आईटी की भूमिका पर ध्यान कद्रित करने पर बल दिया है। राममूर्ति समीक्षा कमेटी (1990) ने भी शिक्षक शिक्षा म. इंटर्नशिप पर जोर दिया है। यशपाल समिति रिपोर्ट (1993) ‘शिक्षा बिना बोझ के’ शीर्षक दस्तावेज म. भी शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी का मुख्य कारण शिक्षण की गुणवत्ता का असंतोषजनक होना माना है। NCFTE-2009 म. भी नवाचारी कद्र का भ्रमण, कक्षागत क्रियात्मक शोध परियोजना, स्कूल इंटर्नशिप इकाई योजना का विकास आदि पर बल दिया गया। नई शिक्षा नीति (2020) ने भी प्रायोगिक अधिगम, विद्यार्थियों का समग्र विकास, अनिवार्य विषयों, कौशलों व क्षमताओं का शिक्षाक्रमीय एकीकरण, सतत व्यवसायिक विकास आदि पर बल दिया है। वर्तमान समय म. ऑनलाइन लर्निंग की भूमिका को देखते हुए विद्यालय अनुभव कार्यक्रम म. बदलाव की आवश्यकता है। SEP-1 के तहत प्रशिक्षु विभिन्न विद्यालयों में शिक्षण कार्य का अनुभव एवं प्रायोगिक स्तर पर प्रशिक्षण प्राप्त करते है। SEP में प्रशिक्षुओं में शिक्षण एवं शिक्षा के संबंध में कौशल दक्षता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान के लैब स्कूल में भेजा जाता है। प्रशिक्षु बच्चे कक्षा कक्षात्मक प्रक्रिया बच्चों के सीखने की प्रक्रिया पाठ्यक्रम आदि को समझने हेतु वास्तविक विद्यालय एक अवसर प्रदान करता है। यदि कक्षायी शिक्षण से लेकर विद्यालय की तमाम गतिविधियों के सजग विश्लेषण का कौशल प्रशिक्षुओं में विकसित कर दिया जाए तो वे अपने कार्यों में नई नवाचार ला सकते है। इसके साथ ही प्रशिक्षुओं में ऐसे कौशलों का विकसित किया जाना है। जिससे वे अपने कार्य का स्वयं से विश्लेषण करके समस्याओ का सामाधान निकाल सकें।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम की प्रकृति एवं स्वरूप

प्रशिक्षु–शिक्षकों का समग्र विकास हेतु विद्यालय अनुभव कार्यक्रम की वर्तमान बदलती हुई आवश्यकताओं में इसकी भूमिका अहम हो गई है क्योंकि ICT ने अपनी निहितार्थता साबित की है।

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा के उद्येश्य प्रप्ति हेतु शैक्षिक कार्यक्रम एवं अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जो प्रशिक्षुओं में शिक्षा की समझ बच्चों की समझ, समस्याओं को पहचानने एवं सामाधान करने की समझ तथा विभिन्न समकालीन एवं वास्तविक चुनौतियों पर चिंतन अभिवृतिका विकास करना है। डी.एल.एड प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों की आवश्यकता नवीनतम शिक्षा सिद्धांतों एवं बहुआयामी विकास कार्यक्रमों की समझ बढ़ाने हेतु प्रशिक्षुओं को विद्यालय की वास्ततिक परिस्थितियों में एक पेशेवर शिक्षक के अनुरूप शिक्षण अनुभव प्राप्त करेंगे। इस कार्यक्रम के तहत प्रथम वर्ष में नियमित रूप से पढ़ाना नहीं है अपितु प्राथमिक विद्यालयों का सूक्ष्म अवलोकन करेंगे। इसके साथ ही बच्चों, शिक्षकों अभिभावक व समुदाय के साथ चर्चा एवं इसके बाद विद्यालयी परिवश सीखने—सिखाने की परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया जाएगा। यह कार्य प्रथम वर्ष में 24 कार्यदिवसों (4 सप्ताह) में विद्यालय का अवलोकन संपन्न करेंगे।

एन.सी.टी.ई. के द्वारा विद्यालय अनुभव कार्यक्रम इस प्रकार है।

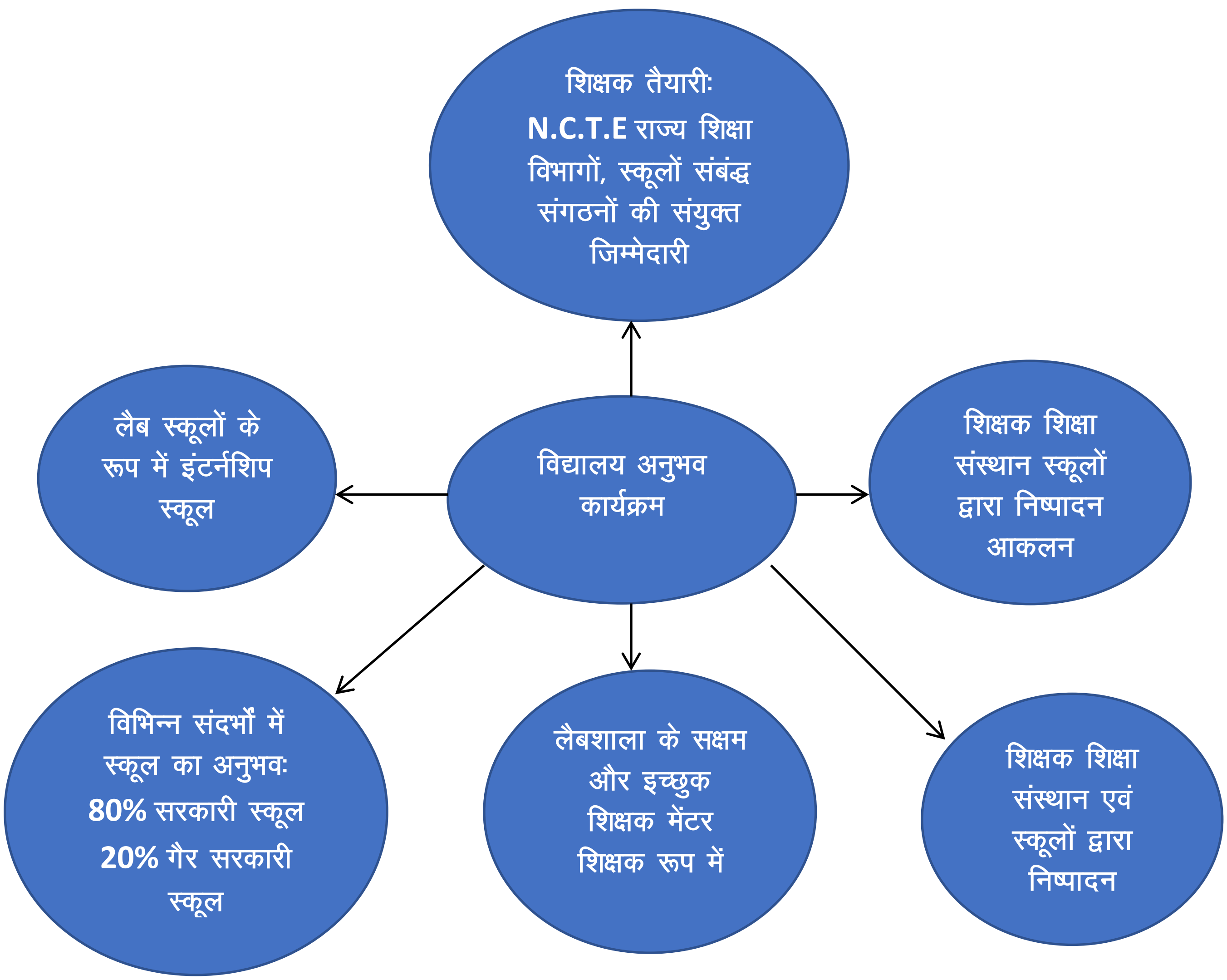

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम का महत्व

SEP के द्वारा प्रशिक्षु सीधे कक्षा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अनुभव प्राप्त करते हैं। विद्यालय के शैक्षिक, सहशैक्षिक गतिविधियों के द्वारा प्रशिक्षुओं को समाज अभिभावक और समुदाय से जुड़ते हैं। चर्चा करते हैं। वास्तविक परिस्थितियें में कार्य कर नये–नये अनुभव प्राप्त करते है। जिससे प्रशिक्षुओं की अंतःदृष्टि का विकास होता है। वह अपने कार्यों का स्वमूल्यांकन व विश्लेषण कर आगामी शिक्षण कार्य का योजना बनाता है, ताकि बच्चों को सर्वोच्च अधिगम के अवसर सुनियोजित किया जा सके। प्रशिक्षु विद्यार्थियों से फीडबैक प्राप्त कर अधिक से अधिक सीखने का प्रयास करता है। विद्यार्थियों से फीडबैक प्राप्त कर अधिक से अधिक सीखने का प्रयास करता है। इस प्रकार SEP प्रशिक्षुओं को भावी एवं पेशेवर शिक्षक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम का संप्रत्यय विद्यालय का संपूर्ण अनुभव के उपयोग दक्षता व कौशल, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास म. भागीदारी से है। परंतु वर्तमान कोविड–19 के दौरान इसकी आवश्यकता एवं महत्व म. परिवर्तन आया है क्योंकि ICT ने अपनी भूमिका सिद्ध की है। राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, NCF–2005, BCF–2008, NCFTE (2009), नई शिक्षा नीति (2020) इत्यादि के दस्तावेजों म. भी विद्यालय अनुभव कार्यक्रम पर अधिक जोर देने की बात प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कही गयी है।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम वास्तविक परिस्थितियों म. कार्य यथा शैक्षिक व सहशैक्षिक कार्यक्रम के द्वारा समुदाय व समाज को जोड़ते हुए समग्र विकास पर बल देता है। प्रशिक्षु–शिक्षक स्वमूल्यांकन, विश्लेषण, प्रतिपुष्टि इत्यादि के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी ढंग से शिक्षण कार्य कर सकता है। वर्तमान परिस्थितियों एवं ICT की भूमिका को देखते हुए विद्यालय अनुभव कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्त्व की प्रासंगिकता अत्यधिक उपयोगी हो गई है।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के निम्नांकित उद्देश्य हैं:–

1. अधिगम की प्रक्रिया तथा प्रशिक्षु–शिक्षकों व विद्यार्थियों की गतिविधियों का विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के माध्यम से विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना।
2. लैब विद्यालयों के रूप म. इंटर्नशिप विद्यालय के अवधारणा को स्थापित करना।
3. पूर्णकालिक शिक्षकों के रूप म. प्रशिक्षु–शिक्षक को भविष्य के लिए तैयार करना।
4. लैब विद्यालय के सक्षम, इच्छुक और तत्पर शिक्षक को मटर शिक्षक के रूप म. भूमिका निर्वहन हेतु प्रेरित करना।
5. शिक्षण–प्रशिक्षण प्रक्रिया म. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के नवीन एवं नवाचारी तरीकों से अवगत करना।
6. विद्यालय म. शिक्षण–प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक समस्याओं एवं चुनौतियों से अवगत कराते हुए स्वयं निदान कर पाने की क्षमता का विकास करना।
7. विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के दौरान बच्चों की मन:स्थिति को समझना, पाठ्य–सहगामी क्रियाकलापों को समझना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण हेतु उन्ह. नवीन एवं नवाचारी प्रयोग के लिए मौका देना।
8. पाठ्यपुस्तक, बाल साहित्य, सहशैक्षिक–क्रियाकलाप, शैक्षिक परिभ्रमण, खेल, ICT इत्यादि के माध्यम से प्रभावी शिक्षण–कार्य के लिए स्वयं को तैयार करना।

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम की रूपरेखा

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षु–शिक्षकों के लिए विद्यालय अनुभव कार्यक्रम का आयोजन निम्नांकित गतिविधियों म. संपन्न होगा:-

सारणी क्रमांक: 1

क्रम संख्या	गतिविधियां	अंक
1	**कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन तथा विश्लेषण**	30
2	**एक्शन रिसर्च**	30
3	**विद्यालय उन्नयन योजना**	20
4	**विद्यालय म. बच्चों से बातचीत का विश्लेषण**	20
	कुल	100

1. कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन तथा विश्लेषण

अवलोकन कौशल एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिससे प्रशिक्षुओं में वैज्ञानिक दुष्टिकोण का विकास होगा। इससे कक्षा में सीखने की प्रक्रिया एवं प्राकृतिक जिज्ञासा को बढ़ावा मिलेगा। अवलोकन के उपयोग से शिक्षण के दौरान आनेवाली कक्षा में विभिन्न चुनौतियों के समाधान में प्रभावशाली होता है। जिज्ञासा को बढ़ावा देता है जिससे छात्रों में उत्साह बढ़ता है और कक्षा कार्यां में अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद करता है। प्रशिक्षुओं द्वारा अवलोकन केवल शिक्षक द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ भी होंगी। इस कार्य के माध्यम से प्रत्येक प्रशिक्षु में कक्षायी शिक्षण का गहन अवलोकन करने की क्षमता का विकास करना है ताकि प्रशिक्षु –शिक्षण के विभिन्न आयामों जैसे बच्चे, शिक्षक,वर्ग, अभिभावक, समुदाय, विद्यालय संस्कृति से परिचित हो सके और शिक्षा के क्षेत्र में अपना नवीन सुझाव प्रस्तुत कर सके । विद्यालय के अन्नयन में सहायक होगा। इस कार्य के अंतर्गत कक्षायी शिक्षण का अवलोकण हेतु प्रत्येक प्रशिक्षु द्वारा अवलोकन सूची का विकास किया जाएगा। जिससे विद्यालय अवलोकन के विभिन्न पक्षों को शामिल किया जाएगा। अवलोकन सूची को प्रत्येक प्रशिक्षु अपने मेंटर से समीक्षा करवाएँगे और उसके बाद सम्बंधित सूची को विद्यालय में अवलोकन हेतु किये जाएँगे। अवलोकन सूची में कुछ विविभन्नताएँ हो सकती है।

कालावधिः

- प्रथम अकादमिक वर्ष के 5वें, 6वें, 8वें और 9वें महीने में एक–एक सप्ताह
- प्रति सप्ताह पाँच (05) दिन (सोमवार–शुक्रवार)

- शनिवार व रविवार अवलोकन का योजना–निर्माण, तैयार व परामर्श सत्र के लिए प्रशिक्षण केन्द्र पर विचार–विमर्श

अवलोकन की अपेक्षाएँ

- प्रति सप्ताह प्रतिदिन अधिकतम तीन कक्षाओं में शिक्षण का अवलोकन
- कक्षा–1 से 5 तक के प्रत्येक कक्षा से न्यूनतम पाँच–पाँच अवलोकन
- प्राथमिक स्तर के प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक विषय से न्यूनतम एक अवलोकन
- अवलोकन सूची के माध्यम से न्यूनतम पंद्रह और बिना अवलोकन सूची के न्यूनतम दस अवलोकन
- कुल मिलाकर न्यूनतम 25 कक्षाओं का अवलोकन
- न्यूनतम दो अवलोकन के विश्लेषण की समीक्षा मेंटर द्वारा

टवलोकन के पश्चात उन प्रमुख बिंदुओं का विश्लेषण भी किया जाना अनिवार्य है। प्रशिक्षु–प्रत्येक सप्ताह अवलोकन करके तथा उनका विश्लेषण करके अपने प्रशिक्षक/मेंटर से उसकी चर्चा करेंगे।

SEP-1 को अत्याधिक व्यावहारिक सफल अभ्यास से परिपूर्ण एवं अनुभव आधारित बनाने के प्रयास के तहत प्रत्येक दृष्टिकोण से समुचित क्रिया कलापों की दृष्टि से अवलोकन प्रपत्र तैयार किया गया है। इससे प्रशिक्षुओं के वैज्ञानिक कौशल अवलोकन का विस्तार होगा जो क्षेत्र बच्चे, विद्यालय, शिक्षण, शिक्षा आदि के अन्नयन में सहायक होगा।

अवलोकन प्रपत्र निम्नलिखित बिंन्दुओं से संबंधित होंगे–

1. विद्यालय अवलोकन रिपोर्ट
2. कक्षा/वर्ग अवलोकन रिपोर्ट
3. दैनिक अवलोकन रिपोर्ट
4. बच्चों से बातचीत
5. प्रधानाध्यापक के क्रियाकलापों का अवलोकन
6. गाँव/मोहल्ला की जानकारी
7. खेल से संबंधित रिपोर्ट
8. पुस्तकालय से संबंधित रिपोर्ट
9. रिफलेक्टिव डायरी
10. प्रशिक्षुओं का विद्यालय अवलोकन का प्रतिवेदन

अवलोकन प्रपत्र संलग्नः–

कक्षा अवलोकन

1. दिनांक..कक्षा......................................शिक्षक..
2. कक्षा में कुल नामांकित बच्चे...............................लड़के.................................लड़कियां.....................
3. उपस्थित बच्चों की कुल संख्या...
4. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की संख्या..

कक्षा प्रक्रियाः–

1. शिक्षक ने कक्षा की शुरूआत कैसे की ?...
....
....
2. विषय................................प्रकरण..उप–प्रकरण.....................................
3. शिक्षक द्वारा बच्चों को दिए गए निर्देश..
....
....
4. बच्चों द्वारा कार्य को कैसे किया गया?..
....
....

अ. समूह में.............................व्यक्तिगत रूप से...........................अन्य रूप से...............................

ब. कितने बच्चे कार्य में सम्मिलत थे?...
....
....

स. कितने बच्चे कार्य में सम्मिलत नहीं थे व क्यों?..
....
....

द.शिक्षक ने बच्चों से क्या–क्या पूछा/बातचीत के कुछ उदाहरण...
....
....

य.बच्चों द्वारा दिये गये जवाब एवं पूछे गए प्रश्न उदाहरण..
....
....
....

05. बच्चों द्वारा ध्यान न देने पर शिक्षक की क्या प्रतिक्रिया थी ?..
....
....
....

06. कक्षा अवधि के दौरान शिक्षक का व्यवहार मित्रवत था ?..
....

....

07. शिक्षक का बच्चों के प्रति व्यवहार/आचरण..

....

....

अ. क्या शिक्षक सभी बच्चों को नाम से जानते हैं ?..

....

ब. क्या शिक्षक सभी बच्चों से बाता करते हैं ?...

....

स. छात्र–छात्राएँ अधिकांशतः किस भाषा में बात करते है ?..

....

....

8. बच्चों के बीच आपसी संबंध किस प्रकार है ?..

....

....

9. क्या पढ़ाने के अलावा कोई अन्य कार्य शिक्षक के द्वारा किया गया ?...................................

....

10. क्या शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट का प्रयोग किया गया है ?..

....

11. छात्राओं की बैठक व्यवस्था किस प्रकार है ?..

....

12. शिक्षक ने बच्चों की समझ को कैसे जाँचा ? उदाहरण के साथ बताइये।.........................

....

....

....

13. शिक्षक द्वारा कक्षा का समापन कैसे हुआ ?..

....

....

14. विशेष आवश्यकता वाले बच्चेः–..

....

अ. क्या शिक्षक का इन बच्चों को अलग से कार्य दिया ?..

ब. कक्षा में इन बच्चों के पढ़ने–लिखने में मदद के लिए अलग से सामाग्री उपलब्ध है ?....

....

....

स. शिक्षक का इन बच्चों के साथ व्यवहार।...

....

....

द. अन्य बच्चों का इन बच्चों के साथ व्यवहार।..

....

....

15. अन्य अवलोकन...

....

....

प्रशिक्षु/का हस्ताक्षर

नाम

वर्ग अनुक्रमांक

दिनांकः–

प्रधानाध्यापक का हस्ताक्षर

विद्यालय का नाम

दिनांकः–

शिक्षकों की कक्षा का अवलोकन तथा विशलेशण

1. विद्यालय का नाम–
2. वर्ग–
3. विषय–
4. विषय वस्तु–
5. शिक्षक का नाम–
6. तिथि–
7. प्रस्तावना कार्य– प्रस्तावना कार्य कैसे आरम्भ की गई ? क्या प्रश्न उत्तर चित्र चार्ट, गीत, कहानी, खेल या किसी गतिविधि और टी0 एल0 एम0 के उपयोग से की गई ?
8. प्रस्तुति कार्य– विषय वस्तु करने के लिए क्या किया गया ? क्या किसी टी0 एल0 एम0 गतिविधि, खेल, कहानी, नाटक का प्रयोग प्रदर्शन प्रश्न उत्तर चार्ट का सहारा लिया गया ? क्या सभी बच्चे रूचि ले रहे थे ?
9. पुनरावृत्ति कार्य– कैसे किया गया कार्य करा कर या प्रश्नों के माध्यम से? क्या बच्चे द्वारा किये गये कार्य का निरीक्षण हो रहा था ? क्या गलतियों का सुधार किया जा रहा था ?
10. गृहकार्य–
11. शिक्षक का व्यक्तित्व–
    वेश– भूषा–
    हाव–भाव–
    भाषा की शुद्धता एवं स्पष्टता–
    बच्चों के साथ अपनापन–
    श्यामपट्ट पर लेखन–
12. पाठ संबंधी कोई अन्य विशिष्ट कार्य–

अवलोकनकर्त्ता प्रशिक्षु शिक्षक

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षु-शिक्षकों के लिए विद्यालय अनुभव कार्यक्रम का आयोजन निम्नांकित सोपानों म. संपन्न होगा:-

सारणी क्रमांक: 2

सोपान	*शैक्षिक एवं सहशैक्षिक क्रियाकलाप*	*दिवस*
1	अभ्यास प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण संस्थान द्वारा लैब विद्यालय का चयन एवं उक्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के साथ विचार विमर्श।	
2	प्रथम अकादमिक वर्ष के पांचव. माह म. 1 दिन (शनिवार) प्रशिक्षण कद्र पर अवलोकन का योजना निर्माण, तैयारी व परामर्श सत्र पर चर्चा।	1
3	पांचवे माह म. 5 दिन (सोमवार-शुक्रवार) लैब विद्यालय म. कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन तथा विश्लेषण।	5
4	विद्यालयी अनुभव को साझा करते हुए प्रशिक्षक से मार्गदर्शन प्राप्त करना।	1

2. एक्शन रिसर्च कार्यक्रम की रूपरेखा

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षुओं हेतु क्रियात्मक शोध कार्य का आयोजन निम्नांकित सोपानों म. संपन्न होगा:-

सारणी क्रमांक: 3

सोपान	शैक्षिक एवं सहशैक्षिक क्रियाकलाप	दिवस
1	अभ्यास प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण संस्थान द्वारा लैब विद्यालय का चयन एवं उक्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के साथ विचार विमर्श।	
2	प्रथम अकादमिक वर्ष के छठे माह म. 1 दिन (शनिवार) प्रशिक्षण कद्र पर एक्शन रिसर्च का योजना निर्माण, तैयारी व परामर्श सत्र पर चर्चा।	1
3	छठे माह म. 5 दिन (सोमवार-शुक्रवार) लैब विद्यालय म. कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन तथा विश्लेषण के आधार पर शोध समस्या का चयन एवं	5

	शोध प्रस्ताव का निर्माण।	
4	प्रशिक्षु क्रियात्मक समस्या के चयन व शोध प्रस्ताव की रूपरेखा के प्रारूपों को साझा करते हुए प्रशिक्षक से मार्गदर्शन प्राप्त करना।	1

इकाई–02

क्रियात्मक अनुसंधान

2.0 परिचय–

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। नवीन तकनीकों से विकास की गति में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में जिस गति से समाज में परिवर्तन एवं विकास हो रहा है उस गति से शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन नहीं हो पा रहा है। आज समाज की माँग है कि शिक्षा में जन–आकांक्षाओं और सामाजिक लक्ष्यों के अनुरूप परिवर्तन एवं सुधार किया जाए। आज विद्यालय प्रबंधन तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को लेकर प्रधानाध्यापक, शिक्षकों एवं शिक्षा क्षेत्र से जुड़े कर्मियों के समक्ष अनेक समस्याएँ आती रहती है, जैसे–बालक का वाचन त्रुटिपूर्ण, वर्तनी अशुद्धि की समस्या, गणित के साधारण प्रश्नों को हल नही कर पाने की समस्या, शुद्ध उच्चारण की समस्या, विद्यालय में नामांकन व उपस्थिति की समस्या, पठन–पाठन में अरूचि की समस्या, अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या आदि। इन समस्याओं के समाधान हेतु हमें निरंतर प्रयासरत रहना है। एक कुशल अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी शिक्षण समस्याओं, चुनौतियों व जिज्ञासाओं का समाधान वैज्ञानिक विधि के माध्यम से करे। अतः प्रशिक्षुओं को शिक्षण के साथ–साथ शोध–कार्य करना भी महत्वपूर्ण है ताकि उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो सके। इसी उद्देश्य के अंतर्गत विद्यालय अनुभव कार्यक्रम में क्रियात्मक शोध को भी रखा गया है ताकि प्रशिक्षुओं में समस्याओं की पहचान एवं उनके अपने स्तर से सामाधन के कौशल विकसित करने के लिए उन्हें क्रियात्मक शोध की प्रक्रिया के विषय में पर्याप्त जानकारी हो सके।

शोध एक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मौलिक समस्याओं का अध्ययन करके नवीन तथ्यों की खोज, नवीन सत्य की स्थापना तथा नवीन सिद्धांतों को प्रतिपादन करना है। शोध को मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. **मौलिक शोध या मूलभूत शोध** जिसमें सिद्धांत खोजे जाते है या सिद्धान्तों का विकास किया जाता है, जैसे–अधिगम का सिद्धान्त।
2. **व्यवहारिक शोध** जिसमें मूलभूत शोध का अनुप्रयोग व्यवहारिक रूप में किया जाता है, जैसे–अधिगम के सिद्धांतो का अनुप्रयोग बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में करना।
3. **क्रियात्मक शोध**–शैक्षिक क्षेत्र में क्रियात्मक शोध का लक्ष्य शैक्षिक समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना तथा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर अपनी कार्य पद्धति में अपेक्षित सुधार लाना है। स्पष्ट है कि शोध के प्रकारों में शैक्षिक दृष्टि से क्रियात्मक शोध सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

2.1 क्रियात्मक शोध की अवधारणा

क्रियात्मक शोध की अवधारणा सर्वप्रथम अमेरिका में कोलियर महोदय द्वारा 1933 में प्रस्तुत की गई तथा आगे इस तकनीक का विकास ल्यूवेन (1946) रॉविन्सन (1948) के शोध प्रयासों के फलस्वरूप हुआ परंतु इसे शैक्षिक क्षेत्र में एक आन्दोलन का रूप देने का श्रेय प्रोफेसर स्टीफेन एम0 कोरे (1953) को जाता है। उनकी पुस्तक ''एक्शन रिसर्च टू इम्प्रुव स्कूल प्रैक्टिस'' के नाम से 1953 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक का स्वागत शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित सभी लोगों ने किया क्योंकि वे

जिन समस्याओं से जुझ रहे थे इस पुस्तक में उन समस्याओं के सामाधान को खोजने की दिशा सुझाई गई थी यह सुझाव ही क्रियात्मक शोध के नाम से जानी गई।
इस प्रकार 20 वीं शताब्दी में एक नयी शोध प्रविधि के रूप में क्रियात्मक शोध का उद्भव हुआ। स्टीफेन एम0 कोरे ने इस बात पर बल दिया कि जो शैक्षणिक समस्या है उनके सामाधान हेतु विद्यालय के स्तर पर ही शोध किया जाना चाहिए और शोध सामान्यतः अध्यापकों द्वारा ही किए जाने चाहिए जिससे कि उनके द्वारा प्राप्त परिणामों का शैक्षिक क्रियाओं पर बेहतर प्रभाव पड़ सके। जब एम0 कोरे भारत में एन. सी. ई. आर. टी. में परामर्शदाता के रूप में कार्यरत थे तब उनके विचारों का प्रचार–प्रसार भारत में हुआ।

स्टीफन एम0 कोरे के अनुसार– '' शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक शोध व्यावहारिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा किये जाने वाले ऐसे अनुसंधान है जिससे वे अपने कार्यो मे सुधार ला सके।
जार्ज जे मौलि के अनुसार– शिक्षक के समक्ष उपस्थित होने वाली समस्याओं में से अनेक तत्काल सामाधान चाहते है। अतः तात्कालिक समस्या–समाधान के उद्देश्य से घटनास्थल पर किया गया अनुसंधान ही सामान्यतः शिक्षा में क्रियात्मक शोध कहलाता है जैसे– यदि किसी विद्यालय विशेष के छात्रों में अनुशासनहीनता इतनी अधिक है कि शिक्षण कार्य सुचारू रूप से नहीं हो पा रही है तो इस समस्या का समाधान उसी विद्यालय में वही के अध्यापकों द्वारा खोजा जायेगा और उनके द्वारा किया गया प्रयास और अध्ययन क्रियात्मक अनुसंधान कहलायेगा।
उपर्युक्त परिभाषाओं से क्रियात्मक अनुसंधान की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती है।

- क्रियात्मक अनुसंधान वास्तविक क्रिया में सुधार लाने का एक सफल प्रयास है।
- क्रियात्मक अनुसंधान में शिक्षा आदि व्यवहारिक क्रियाओं की दैनिक समस्याओं का विधिवत् अध्ययन किया जाता है।
- उस क्रिया में लगे हुए अध्यापक, प्रधानाचार्य, निरीक्षक, समाज सुधारक आदि स्वयं अनुसंधान में क्रियाशील होते है।
- सभी कार्यकर्त्ता एक वैज्ञानिक दृष्टि से कार्य करते है तथा पूर्वाग्रह एवं पक्षपात से बचने का प्रयास करते है।
- क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा कार्यकर्त्ताओं में चेतना आती है वे अपनी समस्याओं के प्रति संवेदनशील होते है।

2.2 **क्रियात्मक शोध के उद्देश्य**

क्रियात्मक शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–

- विद्यालय एवं कक्षा की कार्य–प्रणाली में सुधार लाना।
- शैक्षिक समस्याओं का समाधान प्राप्त करना।
- व्यवसायिक कार्य कुशलता में सुधार लाना।
- विभिन्न परिस्थिति में कार्यों एवं निर्णयों की गुणवत्ता को सुधारना।
- विद्यालय की दैनिक समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना ताकि विद्यालय की कार्य–प्रणाली में अपेक्षित सुधार एवं प्रगति लायी जा सके।

2.3 शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक शोध की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में सीखने—सिखाने की प्रक्रिया तथा विद्यालय प्रशासन के दृष्टिकोण से क्रियात्मक शोध को प्रयोग में लाना निम्नांकित दृष्टि से आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है—

- विद्यालय की परम्परागत क्रिया पद्धति में परिवर्तन एवं सुधार के लिए।
- नवीन परिस्थितियों में बच्चों के समायोजन की समस्याओं का अध्ययन एवं उनके समाधान करने के लिए।
- प्रशिक्षुओं, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, निरीक्षकों तथा पर्यवेक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर उन्हें स्वयं समस्याओं के समाधान में रूचि विकसित करने के लिए।
- शिक्षा द्वारा प्रजातांत्रिक मूल्यों के विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय की क्रियाओं के प्रभावपूर्ण नियोजन के लिए।
- पाठ्य—सहगामी क्रियाओं के प्रति अध्यापकों, छात्रों और प्रशिक्षुओं में रूचि उत्पन्न करने के लिए।
- विद्यालय के दैनिक क्रियाकलापों जैसे शिक्षण—पद्धति, गृहकार्य, उपस्थिति, अनुशासन, प्रशिक्षुओं व छात्रों की उपलब्धि आदि से संबंधित समस्याओं का विश्लेषण करके उसका समाधान करने के लिए।

2.4 क्रियात्मक शोध की उपयोगिता

1. क्रियात्मक अनुसंधान की उपयोगिता व्यवहारिक रूप में

क्रियात्मक शोध/अनुसंधान अधिक व्यवहारिक होता है क्यों कि यह शोध उन्ही व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जो जहाँ कार्यरत है। क्रियात्मक शोध विद्यालय के दैनिक क्रियाकलाप अभिन्न अंग बन गया है। क्रियात्मक शोध विद्यालय में शैक्षिक—निर्णय लेने, शिक्षण पद्धतियों को वैज्ञानिक आधार प्रदान कराने, तथा सम्पूर्ण शैक्षिक क्रिया को प्रभावशाली बनाने में सहयोग देता है।

2. मानसिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना

जब कोई अध्यापक अपने विद्यालय में वंछनीय परिवर्तन लाना चाहते है तो वह शोध करता है। जब वह शोध करता है तो उसमें कुछ मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होता है जैसे—

- उनके सोचने का ढ़ंग
- उनकी मनोवृत्ति बदलती है।
- मनोवृत्ति परिवर्तन के कारण उनके व्यवहार भी बदलते है तथा कार्य—करते—करते वे शिक्षा के प्रक्रिया में आन्तरिक रूप से जुड़ जाते है।

3. शैक्षिक प्रक्रिया में गुणात्मक परिवर्तन

क्रियात्मक शोध द्वारा शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन की अधिक संभावना होती है। विद्यालय के एक छोटा समाज के रूप में देखा जाता है, विद्यालय मे अध्यापकों को, बच्चों को कई प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ता है वे समस्याएँ बच्चों के विकास में अवरोध उत्पन्न करती है। इन समस्याओं को वैज्ञानिक तरिके से सुलझाना आवश्यक होता है।

क्रियात्मक शोध के क्षेत्र से संबंधित समस्याएँ कुछ इस प्रकार की हो सकती है।

- शुद्ध उच्चरण से संबंधित समस्या
- शिक्षण में नई विधियाँ न अपनाने संबंधि समस्या
- गृह—कार्य से संबंधित समंस्या
- कक्षा—कार्य में संशोधन संबंधी समस्या
- गतिविधियों के प्रति विद्यार्थी तथा अध्यापकों द्वारा रूचि नहीं लेने की समस्या
- अध्यापक—अभिभावक सहयोग की समस्या
- खेल के मैदान तथा उपकरण की समस्या
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की व्यवस्था संबंधी समस्या
- सीखने की योजना का प्रयोग न करने की समस्या
- सीखने की योजना के अनुसार कक्षा शिक्षण न करने की समस्या
- वर्तनी संबंधी समस्या
- किसी विषय में विशेष कारण से पिछड़ा होना
- छात्रों का किसी खास विषय में पढ़ने में मन न लगना

2.5 क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया

क्रियात्मक शोध की प्रक्रिया तथा अन्य प्रकार के अनुसंधानों की प्रक्रिया में विशष अंतर नहीं होता है बल्कि वही पद—क्रम एवं प्रक्रिया होती है। क्रियात्मक शोध में सिर्फ इतना ही अंतर होता है कि वह सीमित, लचीला तथा कठोरता एवं औपचारिकताओं से मुक्त होता है। यही शोध कि विशेषता भी है।

क्रियात्मक शोध के चरण एवं प्रारूप निर्माण

प्रथम—चरण— समस्या का चयन

इस अवस्था या चरण में सर्वप्रथम शोध की समस्या को निश्चित किया जाता है।

द्वितीय चरण— कार्य के लिए प्रस्तावों पर विचार—विमर्श

इस चरण में शोध को कार्यन्वित करने के लिए भिन्न—भिन्न प्रस्ताव प्रस्तुत किये जाते हैं और उनकी अनुकूलता पर विचार—विमर्श किये जाते हैं।

तृतीय चरण— क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माण करना

इस चरण में क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माण किया जाता है। परिकल्पना का निर्माण करते समय इस बात को ध्यान में रखा जाता है कि वह समस्या से संगत हो।

चतुर्थ चरण– कार्य विधि

इस चरण में यह उल्लेख किया जाता है कि न्यायदर्श कितना बड़ा तथा किस स्तर से लिया जाय यह निश्चत किया जाता है। इसमें समय सीमा का निर्धारण भी किया जाता है। प्रदत्त संग्रह किस प्रकार किया जाना है ? उसकी रूपरेखा निश्चित की जाती है।

पंचम चरण– प्रदत्त विश्लेषण

इस चरण में प्राप्त प्रदत्त (आँकड़ों) का सांख्यकीय विश्लेषण जैसे प्रतिशत , ग्राफ आदि का प्रयोग किया जाता है।

षष्टम चरण– निष्कर्ष

इस चरण में प्रदत्त (आँकड़ों) का विश्लेषण के परिणामेंा के आधार पर निष्कर्ष या संगत परिणाम प्राप्त किये जाते है।

सप्तम चरण– नवीन शोध के लिए सुझाव

क्रियात्मक शोध के इस अंतिम चरण में प्राप्त निष्कर्षों के आलोक में नये शोध–कर्त्ताओं को आगे शोध करने हेतु सुझाव दिये जाते हैं।

यद्यपि यह प्रयास किया जाता है कि इस समस्या का शत–प्रतिशत समाधान हो जाए, लेकिन पूर्णतः निराकरण नहीं हुआ अतः फिर इसी पर कार्य किया जायेगा।

Action Research Cycle

क्रियात्मक शोध का चक्र

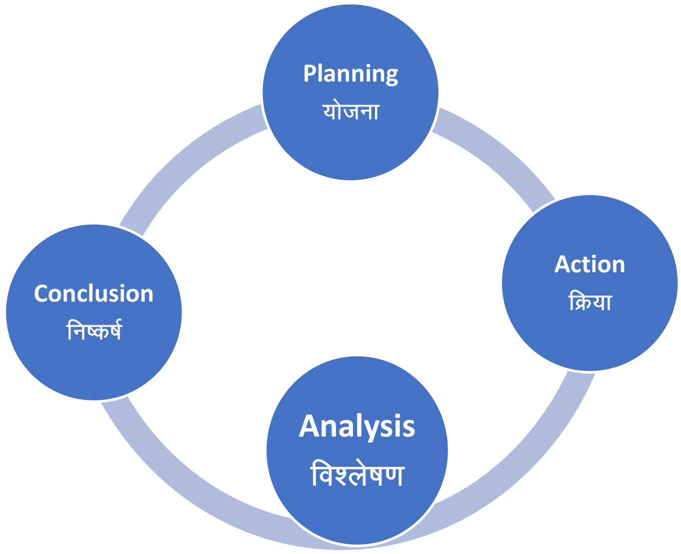

ईकाई–3

विद्यालय उन्नयन योजना

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षुओं हेतु विद्यालय उन्नयन योजना कार्य का आयोजन निम्नांकित सोपानों म. संपन्न होगा:

सारणी क्रमांक: 4

सोपान	शैक्षिक एवं सहशैक्षिक क्रियाकलाप	दिवस
1	अभ्यास प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण संस्थान द्वारा लैब विद्यालय का चयन एवं उक्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के साथ विचार विमर्श।	
2	प्रथम अकादमिक वर्ष के आठव. माह म. 1 दिन (शनिवार) प्रशिक्षण कद्र पर विद्यालय उन्नयन योजना की रूपरेखा के प्रारूपों क निर्माण, तैयारी व परामर्श सत्र पर चर्चा।	1
3	आठव. माह म. 5 दिन (सोमवार–शुक्रवार) लैब विद्यालय म. अवलोकन तथा आंकड़ों का विश्लेषण के आधार पर विद्यालय उन्नयन योजना का निर्माण।	5
4	प्रशिक्षु विद्यालय उन्नयन योजना की रूपरेखा प्रारूपों को साझा करते हुए प्रशिक्षक से मार्गदर्शन प्राप्त करना।	1

परिचय

विद्यालय उन्नयन योजना विद्यालय के शैक्षिक माहौल को बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षु द्वारा किया जाने वाला कार्य योजना है, जिसमें प्रशिक्षु विद्यालय के वास्तविक परिस्थितियों से परचित होने के बाद वहाँ के उपलब्ध संसाधनों जैसे मानवीय संसाधन, भौतिक संसाधन का बेहतर से उपयोग करके विद्यालय के शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाते हैं। विद्यालय उन्नयन योजना का आवश्यक उद्देश्य विद्यालय की प्रभावशीलता को बढ़ाना और उसमें सुधार करना है।

विद्यालय उन्नयन योजना के दौरान प्रशिक्षु–शिक्षक विद्यालय का वास्तविक विश्लेषण कर उसके आधार पर क्षेत्रवार समस्याओं की सुचि बनायें। ये समस्याएँ शैक्षिक, सह–शैक्षिक, वातावरण, विभागीय कार्यक्रम

व अन्य क्षेत्र से हो सकते हैं। जब क्षेत्रवार समस्याओं की सूचि तैयार हो जायें तो उन्नयन बिन्दुओं का निर्धारण किया जाये। विद्यालय उन्नयन योजना बनाते समय प्रशिक्षु का प्राथमिक उद्देश्य यह होना चाहिए कि शैक्षणिक स्तर एवं परीक्षा परिणाम में गुणात्मक अभिवृद्धि हो। इसके लिए वह विभागीय कार्यक्रमों व शिक्षा दर्शन को प्राथमिकता प्रदान कर सकते हैं।

ध्यान देने योग्य बातें :– विद्यालय उन्नयन योजना का निर्माण करते समय कुछ निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

(1) विद्यालय उन्नयन योजना उपलब्ध क्षमता, संसाधन और आवश्यकता के आधार पर होना चाहिए।

(2) इसके लिए अध्यापकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों, समुदायों एवं समाज का सहयोग जरूर ले सकते है।

(3) समयावधि तैयार करें एवं कार्य चरण के अनुसार अपने कार्यो का संपादन करें। ये समयावधि एक दिवसीय साप्ताहिक, वार्षिक,मासिक, 6 माही या वार्षिक भी हो सकते है।

(4) छात्रों का नैतिक विकास एवं आधुनिकता के साथ उनका समन्वय स्थापित करने के लिए विद्यालय को उस तरह उन्नयन करना।

उद्देश्य

विद्यालय उन्नयन योजना के सामान्य उद्देश्य हैं:–

- प्रशिक्षु–शिक्षक विद्यालय के प्रति सकरात्मक दृस्टिकोण विकसीत कर सकें।
- वे अपनेआप को विद्यालय के साथ वास्तविक रूप से स्वयं को जोड़ सकें।

इस योजना के तहत प्रशिक्षु को कई नवीन अनुभव मिलते हैं। इस अनुभव में उन्हें विद्यालय से संबंधित कई आकडें उन्हे मिलते हैं। ये आँकडे उन बच्चों से बातचीत या अध्यापकों से पूछ कर या विद्यालय के पोषक क्षेत्र में रहने वाले लोगों से पूछ कर भी वह आँकडों को इकट्ठा कर सकते हैं। इन आकड़ों का विश्लेषण कर के भी वह विद्यालय के उन्नयन योजना को बेहतर कर सकते हैं।

उदाहरण

विद्यालय उन्नयन के लिए प्रशिक्षु उदाहरण के तौर पर निम्न योजना बना सकते हैं, जैसे - विद्यालय के चेतना सत्र को प्रासंगिक बनाना, समय सारणी में जो कमी है उसकी समीक्षा रिपोर्ट बनाना, विद्यालय के प्रबंधन का सुझावात्मक रिपोर्ट देना, विद्यालय के पर्यावरण को समृद्ध करना, विशेष रूप से पिछड़े बालकों के लिए अतरिक्त कक्षाओं का आयोजन करना । इसमें वे गणित, भाषा समृद्धि, नैतिक शिक्षा इत्यादि जैसे विषय को सम्मलित कर सकते हैं। लिखित एवं गृह–कार्य की जाँच, पाठयक्रम के अनुसार पाठ निर्धारित समय पर पूरा करना।

सह-शैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत खेलकूद का समय-समय पर आयोजन एवं समय-सारणी में उचित स्थान एवं खेल-खेल में ही शिक्षा को देने की एक बेहतर योजना बनना। उत्सव पर्व एवं जयंतियों का आयोजन/वृक्षारोपण, बागवानी, पेंटिंग, मूर्तिकला, गायन, वादन इत्यादी का बेहतर समन्वयन करना। भौतिक विकास के अन्तर्गत कक्षा-कक्ष को काफी रोचक बनाना, जैसे - कक्षा-कक्ष के दीवार पर पेंटिंग, चित्रकला, चिह्न इत्यादी का निरूपण ताकि इन तथ्यों को देखकर बालक सीख सके। विद्याालय शौचालय परिसर एवं की बेहतर उचित सफाई, खेल मैदान की सफाई एवं सौंदर्यीकरण आदि पर ध्यान देना ताकि बालक एवं अपने विद्यालय से लगाव महसूस करे । पुस्तकालय में अपलब्ध पुस्तकों रोचक कहानी की किताबों को बच्चों को उपलब्ध कराना।

विद्यालय उन्नयन योजना का मुल्यांकन

विद्यालय उन्न्यन योजना की रिपोर्ट प्रशिक्षु-शिक्षक अपने महाविद्यालय में प्रस्तुत करेंगे एवं अध्ययन केन्द्र के साधन सेवी या मेंटर उस योजना का मुल्यांकन करेंगे एवं उन्हें उचित मार्गदर्शन उपलब्ध करायेंगे।

इकाई–4

विद्यालय में बच्चों से बातचीत का विश्लेषण

शिक्षा की हर प्रणाली का केंद्रीय पात्र शिक्षार्थी होता है। विद्यालय में वह पात्र बचे होता है। बच्चों में अपनी खुद की सीखने की क्षमता होता इसलिए विद्यालय में सीखने की अवसर की दिशा और दायरा शिक्षकों द्वारा निर्देशित या विश्लेषित किया जाता है। बच्चा ही शैक्षिक व्यवस्था का केंद्रिय पात्र होता है (एवं विद्यालय सीखने का एक मंच होता है)

बच्चा एक सजीव प्राणी है वयस्क की तुलना में कभी ज्यादा उर्जावान उत्सुक एवं तत्पर बच्चों के अंदर स्वाभाविक उत्कंठा एवं सीखने की असीम क्षमता होती है। बच्चा एक कोरे कागज की तरह व़िद्यालय नहीं आता है वह कोई भाषा नही जानाता है, उसके अपने अनुभव एवं संवेदनाएँ होती है। किसी भी बच्चे का जीवन घरेलु भाषाओं के साथ शुरू होता है। बच्चा अपनी सहजता भाषिक क्षमता और परिवार तथा आसपास के लोगों से संवाद संपर्क का अनुभव लेकर विद्यालय आता है। उसके पास संवाद करने को पूर्ण क्षमता विकसित हो चुकी होती है। वह केवल अनगिनत शब्दों के साथ स्कूल नहीं आता है भाषा की जटिल और समृद्ध संरचनाओं के नियम ध्वनि शब्द आदि की जानकारी रखता है। विद्यालय में घरेलु भाषा की जानकारी –अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विद्यालय एवं घरी के बीच पुल का काम करेगी। इसके जिरिए बच्चों के अपने अनुभव तथा स्कूलों में सीखी गई बातों के बीच संबंध बनाया जा सकता है। बच्चों के भवजगत का नियम घरेलु भाषा में होता हैं और बच्चों का अभित्या करने की उनको क्षमता भी उसकी भाषा में ही विश्लेषण किया जाता है।

बच्चों के पास अनुभव का मगर काफी छोटा होता है। बच्चों का अर्थ निकालने एवं बातचीत का विश्लेषण करने की क्षमता अल्प विकसित होती है विद्यालय में बच्चों से बातचीत करना सीखने तथा सीखी हुई बातों का अधिक सुदृढ़ बनाने का एक माध्यम है परंतु वास्ताविकता यह है कि हमारी कक्षाओं में बच्चों से खुलेपन से बातचीत करना या बच्चों को बातचीत का माहौल देना यह हमारी स्कूली कक्षा में नाम मात्र ही संभव हो पाता है। यह अत्यंत ही मुश्किल तब हो जाता है जब हामारे शिक्षक का बच्चों के प्रति यह दृष्टिकोण ही नहीं बन पाता है कि कक्षा में बातचीत करना क्यों आवश्यक है बच्चों से बातचीत करने के क्या फायदे संभव है बच्चो से बातचीत करने का क्या अर्थ है कई शिक्षक कक्षा में पहुँचने से पहले यह तय ही नही कर पाते है। कि बच्चों से क्या बातचीत किया जाय इसकी शुरूआत कैसे की जाए। बच्चों को बातचीत करने के तरीके को सीखने के माध्यम मे कैसे परिवर्तित किया जाय। बातचीत करने का माध्यम घरेलु हो या स्कूली इसका निर्धारण समयानुसार शिक्षकों द्वारा करना होगा। ये ससारी बातें शिक्षकों के बच्चों के प्रति दृष्टिकोण उनकी रचनात्मक सोच आदि पर निर्भर करती है। बच्चों से बातचीत करना इसलिए आवश्यक हो जाता है कि सिकी भी शीर्षक को थोड़ी पृष्ठभूमि की जानकारी देने एवं उसे आसपास की वातावरण के साथ सामंजस्य करने में आसानी होगी। वे अपने पूर्व स्मृतियों के आधार इसका उत्तर देगे जिससे विद्यालय में उत्साही एवं भयमुक्त वातावरण का निर्माण करने में शिक्षकों एवं बच्चों के बीच निरन्तर संवाद होना सिर्फ पाठ्यक्रम एवं कक्षा कक्ष के सवालों एवं जबावों तक ही नहीं सीमित रहता है, वे एक दूसरे से अपने अनुभवों को भी साझा करते हैं। इससे शिक्षक तथा बच्चों के बीच एक मधुर संपर्क स्थापित हो जाता है।

बातचीत मानव विकास का एक हिस्सा है जो सोचने विचारने सीखने और दुनिया को समझने में हमारी मदद करती है। बच्चों से बातचीत करने के उद्येश्य निम्नलिखित है–

1. डनके विचारों के बारे में छानबीन करना जिसकी खोज उसने की है।
2. तरकीय क्षमता विकसित और सृजित करना
3. छात्र अधिक सीख रहे है।

किसी कक्षा में छात्रों के बातचीत के विभिन्न तरीके होते हैं एक दूसरें से जुड़े हुए उच्च स्तर को तार्किक क्षमता विकसित करने के लिए बातचीत करना आवश्यक है। पूर्व में शिक्षकों द्वारा बातचीत का दबदबा होता था और वह छात्रों की बातचीत या छात्रों के ज्ञान के अनुसार अधिक मान्य होती है। हालांकि पढ़ाई के लिए बातचीत के लिए पाठों को शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। ताकि छात्र अधिक से अधिक बातचीत करे। इससे कठिन मुद्ों के बारे मे बात करके उसके समस्या का सामाधान निकाला जा सकता है। किसी भी बात को पता करने के लिए अगर किसी से बात करना चाहते है। तो शिक्षक बेहद सुनियोजित गतिविधियाँ से इस सहज प्रवृति को बढ़ा सकते हैं।

कक्षा में सीखने के लिए गतिविधियों पर बातचीत की योजना बनाना–

जो कुछ आप छात्रों को सिखाना चाहते है उनके इर्द गिर्द पाठ की योजना बनाए और इसके बारे में आप किस प्रकार की बातचीत से छात्रों विकसित होते देखना चाहते है। कुछा प्रकार की बातचीत अन्देखी या खोज बीन करने वाली होती है उदाहरण के लिए इसके बाद क्या होगा– क्या हमने इसे पहले से देखा है । तुम इसके बारे में क्या सोचते हो कुछ अन्य प्रकार की बातचीत हो सकती है। उदाहरण के लिए विचार तर्क या सुझाव का रूख करना

इसे रोचक और मजेदार बनाएँ और प्रयास करे कि सभी छात्र बातचीत में भाग ले सकें। छात्रों का उपहास के पात्र नहीं बनने दें। गलत होने के डर के बिना अपने दृष्टिकोण और विचार को व्यक्त करने तथा उन्हें सहज एवं सुरक्षित महसूस करने के लिए प्रेरित करें।